Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.10, May, 2024**

(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

Knowledgeable Research

ISSN 2583-6633

Vol.02, No.10, May, 2024

http://knowledgeableresearch.com/

समकालीन राजनीति का यथार्थ प्रकटीकरण – ''विक्रमचरित आख्यान''

डॉ. महावीर प्रसाद साहू एवं डॉ. कल्पना श्रृंगी

सहायक आचार्य, संस्कृत,राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)

https://doi.org/10.57067/kr.02.i10/890

Email: veer.ranveer41@gmail.com

****

शोधसार

मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले में जन्म प्राप्त प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी निवर्तमान में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (नई दिल्ली) के कुलाधिपति रहे है। आपके द्वारा रचित ग्रन्थों में आदिकवि वाल्मीकिः (1976) संस्कृत कविता की लोकधर्मी परम्परा (1976, 1999) काव्यशास्त्र व काव्य (1987) लैक्चर्स ऑन नाट्यशास्त्र (1992) नाट्यशास्त्र और विश्वरंगमंच (1988) नाट्यशास्त्र विश्वकोश (चतुर्षु खण्डेषु, 1999) इत्यादि आलोचनात्मक व काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ प्रमुख है।

*साहित्य क्षेत्र में इनके प्रमुख ग्रन्थ रोटिकालहरी (लहरीकाव्य) अभिनवशुक सप्तति (कथासंग्रह) प्रेक्षणं सप्तकम् (नुक्कड़ नाटक) करूणा (लघूपन्यास), अन्यच्च (उपन्यास) विक्रमचरितम् (आख्यान) प्रमुख है। आपके विपुल उत्कृष्ट कृतित्व के कारण ही आप अनेक प्रसिद्ध पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके है। आपके द्वारा रचित ''**विक्रमचरितम्**'' नौ उच्छवासों मे विभक्त एक आख्यान है, जो पौराणिक शैली में निबद्ध होते हुए भी अपनी विषय–वस्तु से आधुनिक युग की राजनीतिक व सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त करता प्रकट होता है।*

बीज शब्द : *शूकर, दुर्गमवन, मैथूनानि, पूतिकरीति, स्वमातृन, छूकर परिषदि, खणखणायते, जंघावल, दंदशुक, निकुम्भ, मिथ्याव्रत शास्त्री*

****

प्रस्तावना –पंचतन्त्र, हितोपदेश शैली में लिखे गये इस आख्यान मे सिंह, शूकर, श्रृगाल, वृक, व्याध्र, गज, शुक, मयूर इत्यादि पशु–पक्षी पात्र है। वीभत्स रस प्रधान इस आख्यान में श्रृंगार, वीर, हास्य, करूण इत्यादि रसों की अनुभूति पाठकों मे कौतुहल उत्पन्न करती है। प्रस्तुत आख्यान का कथानक इस प्रकार है।

Author Name: डॉ. महावीर प्रसाद साहू एवं डॉ. कल्पना श्रृंगी

Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.10, May, 2024**

(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

राढ़ापुर नामक ग्राम में घूकर नामक एक सुअर निवास करता था। वह चिरकाल से तिलकसिंह नामक ग्राम मुखिया की हवेली के निकट अतिसंकीर्ण व अत्यधिक मलिन गली में अपनी षोडश शूकर सुन्दरीयों के साथ सुख पूर्वक निवास करता था।

एकदा वह शूकर तिलकसिंह की हवेली पर आधिपत्य करने की इच्छा से हवेली के भीतर प्रवेश कर गया किन्तु वहाँ उस शूकर की वज्राघात के समान भयंकर पिटाई हुई। इस अपमान से दुःखी होकर शूकर उस रात ही अपनी समस्त षोडश शूकरवधूओं को त्याग कर दुर्गम वन नामक वन में चला गया।

उस दुर्गम वन में महाराज विक्रमसिंह नामक सिंह शासन करता था। जो सर्वगुण सम्पन्न और प्रतापी शासक था। दुर्गम वन में उसके शासन काल में प्रजा मे चहुँओर सुख–शान्ति व्याप्त थी किन्तु घूकर नामक शूकर के उस वन में प्रवेश करते ही वहाँ का वातावरण कुछ भिन्न सा ही हो गया। चतुरिका नामक लोमड़ी जो महाराज विक्रमसिंह की निजी सचिव थी तथा कम्बुकण्ठ नामक सियार जो पूर्व में कोषाध्यक्ष था दोनों के षडयन्त्र से विक्रम सिंह को निर्वासित कर घूकर को उस वन का राजा बना दिया जाता है।

उसी दिन से उस क्षेत्र में शूकर साम्राज्य की स्थापना हो जाती है। योग्य व्यक्तियों की अवमानना कर अयोग्य व निकृष्ट व्यक्तियों को उस शूकर साम्राज्य में राजकार्य का भार सौपा जाता है। मंत्री परिषद् का भी नाम बदलकर शूकर परिषद् कर दिया गया। साहित्य को राजनीति का आधार बनाकर उसे अवनति के रसातल पर पहुँचा दिया जाता है। सब तरफ सम्पूर्ण शूकर साम्राज्य में अनाचार व भ्रष्टाचार व्याप्त हो जाता है। वहाँ की प्रजा पलायन कर अन्यत्र निवसित हो जाती है।

इधर राजा विक्रमसिंह ने अपने विश्वस्त सहयोगियों के साथ शूकर साम्राज्य को नष्ट करके पुनः खोया हुआ साम्राज्य व मान प्राप्त किया। शूकर ने विक्रमसिंह से अभयनदान मांगकर अपनी रक्षा कर ली परन्तु कहीं न कहीं फिर से उस के मन में शूकर साम्राज्य की स्थापना करने की उत्कट लालसा जाग्रत रहती है। यहीं इस आख्यान का व्यंग्यात्मक अन्त हो जाता है।

प्रस्तुत आख्यान में लेखक ने सिंह राज्य के स्थान पर शूकर साम्राज्य को प्रतिष्ठापित कर वर्तमान राजनीति पर सटीक व्यंग्य किया है कि किस प्रकार आज अयोग्य व्यक्ति शासन करते हुए

Author Name: **डॉ. महावीर प्रसाद साहू एवं डॉ. कल्पना श्रृंगी**

Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.10, May, 2024
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

इस देश का पतन कर रहे हैं। वर्तमान राजनीति वास्तव में स्वार्थ नीति है। एक ही दल के विधायक एक दूसरे से तब तक जुड़े रहते है। जब तक कि उसका स्वार्थ आपसी सम्बन्ध बनाये रखने में सिद्ध होता है। कम्बुकण्ठ व चतुरिका नामक पात्र इस आख्यान में इसी कोटि के हैं जो विक्रमसिंह के शासन काल में उसके सेवक थे और शूकर साम्राज्य में शूकर की वन्दना करते हैं। यथा :–

जय जय शूकर जय जय शूकर जय शूकर विंश्रातमते
जय धरणीधर जय घोषीवर, पीनश्रोणी जनितनते।
कर्दमचारी मलचमहारी संतत लेपितपंकतले
धरणीधारी जय जय मुस्तक्षति कृतपाताल गते।।[1]

देश सेवा का माध्यम राजनीति इतना भ्रष्ट हो चुकी है कि इसमें सज्जनों के लिए कोई स्थान नहीं हैं। आज न जाने कितने ही अनगिनत नेता न जाने कितने ही घोटालों मे लिप्त नजर आते है किन्तु उनका बाल भी बांका नहीं होता और वे अधिकाधिक प्रसिद्धि व सम्मान पाते हैं। जो जितना निर्लज्ज व तिकडम बाज होता है वह उतना ही राजनीतिक क्षेत्रों पर कब्जा करने में सफल होता है। जैसे कम्बुकण्ठ नामक घूसखोर सियार खाद्यमंत्री तथा चतुरिका नामक धूर्तलोमड़ी शूकर साम्राज्य में प्रधानमंत्री निजी सचिव के पद पर आसीन होते है। यथा :–

इतस्तु विक्रमसिंहो दुर्गमवनस्यातिदुर्गमायां गुहायामेकाकिजीवनमयापयत्। विरक्तातस्मान्मन्त्रिपरिषदो भूतपूर्वाः सदस्याः। विष्कम्भो नाम व्याघ्र इतस्तु शूकराः सुखेन निवसितुं न ददतीत्युक्त्वा पलाय्य विदेशे वसतिमकरोत्। कुम्भो नाम गजस्तु स्वयूथेन सह सुदूरं तीर्ययात्रार्थमगच्छत्।[2]

स्वार्थ से आवृत्त व्यक्ति अपनी हित चिन्ता में सदा दूसरों के अधिकारों का दमन करता है। मनुष्य धर्म मार्ग से इतना पतित होता जा रहा है कि कवि ने इस विषय में पशुओं को मनुष्य से श्रेष्ठ बताया है। यथा

आहार निद्रा भय मैथुनानि
सामान्यमेतत् तु नरैः पशूनाम्।
धर्मः पशूनामधिको विशेषो
धर्मेण हीनास्तु नरैः समानाः।।[3]

Author Name: डॉ. महावीर प्रसाद साहू एवं डॉ. कल्पना श्रृंगी
Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.10, May, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

अर्थात् आहार निद्रा, भय और मैथुन ये चार आदतें तो मनुष्यों की तरह पशुओं की भी है। पर पशुओं में धर्म ही एक अधिक विशेष है। जो पशु धर्म से हीन है, वे मनुष्यों के समान है।

आज जब राजनीति स्वयं ही भ्रष्ट है तो शासन को चलाने वाले कार्यकर्ता भी इससे अछूते नहीं है। इन्हें जनता की भलाई करने की अपेक्षा परेशान करना ज्यादा सुहाता है। आज जिस दल की सरकार होती है उसी के समस्त कार्यकर्ता शासनतंत्र की बांगडोर सम्भालते है तथा उन्हीं की मनमर्जी से शासन चलता हैं। आज दुषित राजनीति के कारण अनेक विश्वविद्यालय, सरकारी संस्थानों के नाम बार–बार बदल दिये जाते है क्योंकि बदलते शासन तन्त्र मे उन संचालकों की दृष्टि में विगत किया हुआ अब उचित नहीं है जैसे शूकर साम्राज्य की स्थापना के बाद वहाँ के समस्त पर्वतो, नदियों, उपवनों के नाम शूकराधारित कर दिये गये।

तस्माच्च दिनाद् दुर्गमवने सकलानां स्थानानां नदीनां पर्वतानामुपवनानां च नामपरिवर्तन क्रमः प्रचचाल। तथाहि– दुर्गमवनमारात् प्रववाह मालिनी नदी अस्या मालिनीति नाम्नि सामन्तवादगन्ध उज्जृम्भत इति तैः शूकरानुयायिभिः घूकरमहाराजस्य मातुः पूतिकर्या नाम्ना तस्या नघीः पूतिकरीति संज्ञया व्यपदेश आरब्धः।[4]

आज साहित्य और राजनीति का सम्बन्ध अन्योन्य हो गया है। सांख्य समस्त प्रकृति पुरूष संयोगवत् आज साहित्य और राजनीति मे पड्ड़वन्धवत् अन्योन्याभाव सम्बन्ध हो गया है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। किन्तु आज वह दर्पण मलिन हो गया है और उचितशासनाभाव में राजनीति पड्गु हो गई है। अतः इन दोनों के पड्गु–अन्धवत् संयोग से ही आज यह देश प्रगति कर रहा है। प्रस्तुत आख्यान में कवि ने इस तथ्य को भी भलीभाँति उकेरा है। जब शूकर दुर्गम वन का राजा बन जाता है तो उस पर अनेक काव्यों की रचना कर अत्यन्त तुच्छ कवि भी महाकवि की उपाधि से विभूषित होकर अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित होते रहते है। यथा –

मिथ्याव्रतशास्त्रिनाम्ना रासभेन ''आदिवराह'' – घूकरशूकरयोश्चरितस्य तुलनात्मकमध्ययनमिति शोधप्रबन्धो विरचितः विद्यावारिधिरित्युपाधिश्च लब्धः। अन्येन केनचित् मलकान्तनाम्ना शुना घूकरमहाराजचरितं नाम महाकाव्यं पूरितं प्रकाश्यतां च नीतम्। तदधिकृत्यासौ लक्षरूप्यकमितेन श्री शारदापुरस्कारेण सम्मानितः।

अपि च

Author Name: डॉ. महावीर प्रसाद साहू एवं डॉ. कल्पना श्रृंगी
Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.10, May, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

प्रकाशका वराह–स्तोत्राणि, वराह वंशावलीश्च प्रकाश्यामासुः। कवयस्तु घूकरस्तुति शतकम्, घूकरचरित यशः सौरभम्, घूकरभैरवी, घूकरवैजयन्तीव्यादीनि काव्यानि रचयामासः। कश्चन काव्याभासनिबन्धपटुर्बटुकदत्तों नामो घ ूकरायणम् नाम महाकाव्यं पञ्चषैदिवसैः प्रणीतम् महाकवि–मूर्धन्यो–भूत। अपर : कश्चन राजशेखरस्य काव्यमीमासायाः।

नमस्तस्मै वराहाय लीलयोद्धरते महीम्।
खुरयोर्मध्ये यस्य मेरूः खणखणायते।।[5]

इति पद्यं स्वोपज्ञं विज्ञाप्य खणखणकविरिति विद्वदभागभवत्।

समकालीन राजनीति में लालफीताशाही अपने पैर प्रसार रही है। एक बार कोई भी व्यक्ति इस क्षेत्र में स्वयं को स्थापित कर ले फिर वह अपने समस्त बन्धु बान्धवों को इस क्षेत्र में लाकर खड़ा कर देता है और अपने पक्ष को मजबूत करता जाता है। प्रस्तुत आख्यान मे भी कम्बुकण्ठ नामक सियार स्वयं खाद्य मन्त्री का पद पाकर शनैः–शनैः अन्य पदों पर अपने ज्ञाति–बन्धुओं को आसीन कर देता है। जिससे वह एक मजबूत प्रतिद्वन्दी बनकर सामने उपस्थित हो सके। यथा :–

कदाचिच्छूकरपरिषदि प्रस्तावं पुरस्कृत्यसर्वसम्मत्या च तं पारयित्वा कम्बुकण्ठः शूकरक्षेत्र–विकास–परिषद् स्थापयामास। तस्यां च परिषदि स्वमातृन् तनयांश्च तेषु तेषु पदेषु योजयामास। [6]

राजनीति में पद प्राप्त करने की लालसा इतनी उग्र होती है कि एक बार कोई भी व्यक्ति इस पद को प्राप्त कर ले वह इसका मोह छोड़ नहीं सकता। भले ही वह व्यक्ति उस पद के योग्य नहीं हो। इस आख्यान का शूकर पात्र भी इसी वृत्ति का है जो येन–केन प्रकारेण दुर्गमवन का राजा बन बैठा किन्तु जब वह पदच्युत होकर अपना जीवन बचाकर वहाँ से भागता है तो कहीं न कहीं उसके मन में पुनः शूकर साम्राज्य स्थापना की उत्कृट इच्छा जाग्रत रहती है। यथा :–

विक्रमसिंहस्तुतथेत्युक्त्वा पलायमानं शूकरमनुपदं कियद्दुरमधावत्।
शूकरस्तू सर्वात्मभावेन जंघाबलमवलम्ब्य द्रुतं द्राव दुर्गम वनस्य
गुल्मेषु च लीनः पुनरपि स्वसाम्राज्यस्य स्थापनायाः स्वपनः पश्यन्नतिष्ठत्।[7]

Author Name: **डॉ. महावीर प्रसाद साहू एवं डॉ. कल्पना श्रृंगी**
Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.10, May, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

उद्‌देश्य

प्रस्तुत आख्यान में राजनीति का यथार्थप्रकटीकरण ही कवि का प्रमुख ध्येय रहा है। अतः कवि ने इसके पात्रों का नामकरण भी इसी आधार पर किया है **जैसा नाम वैसा काम** ही इन पात्रों का व्यक्तित्व रहा है जैसे– विक्रमसिंह पराक्रमी राजा, दूरदर्शी – दूरदृष्टि वाला अमात्य, कुम्भ नामक हाथी, निकुम्भनामक गैंडा इत्यादि सज्जन पात्र। चतुरिका नामक लोमड़ी कम्बुकण्ठ सियार, दंदशुक भेडिया, घूकर नामक सुअर, मिथ्याव्रत शास्त्री नामक गधा, इत्यादि निकृष्ट पात्र। इस प्रकार इस सम्पूर्ण आख्यान में वर्तमानकालीन दूषित हो चूकी राजनीति पर सटिक व्यंग्य करना ही कवि का प्रमुख उद्देश्य रहा है। जिसे हम वर्तमान मे प्रत्यक्ष देख भी रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. विक्रमचरित आख्यान – पृ. 25–26
2. विक्रमचरित आख्यान – पृ. 45
3. विक्रमचरित आख्यान – पृ. 07
4. विक्रमचरित आख्यान – पृ. 42
5. विक्रमचरित आख्यान – पृ. 43–44
6. विक्रमचरित आख्यान – पृ. 53
7. विक्रमचरित आख्यान – अंतिम पृष्ठ

Author Name: डॉ. महावीर प्रसाद साहू एवं डॉ. कल्पना श्रृंगी
Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024